इक्कीसवीं सदी के पहले दशक की उर्दू शायरी। एक जायज़ा

डॉ. इशरती खान
हिन्दी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय

बीसवीं सदी तक आते आते उर्दू शायरी ने कई करवटें ली हैं और अपने मौलिक रूप में हमसे रू-ब-रू हुई है, तब जाकर उर्दू शायरी ने, उर्दू साहित्य में अपनी एक अच्छी पहचान बनाई है। उर्दू साहित्य में भी, हिन्दी साहित्य की भाँति प्रारम्भ में शायरी ही अधिक मात्रा में हुई है जिसे हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। एक ग़ज़लिया शायरी और दूसरी नज़मिया शायरी। इक्कीसवीं सदी की उर्दू शायरी पर विचार करने से पूर्व यह आवश्यक जान पड़ता है कि 'ग़ज़ल' और नज्म' के अन्तर को स्पष्ट किया जाए तभी हम उर्दू शायरी को समझ सकते हैं। ग़ज़लिया शायरी का क्षेत्र सीमित होता है। इसमें सिर्फ ग़ज़लों को ही समाविष्ट किया जाता है। जबकि नज्म का क्षेत्र व्यापक होता है। इसमें कसीदा, मरसिया, मसनवी और नज्म को शामिल किया जाता है। इनमें से नज्म का महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'नज़्म' को पाबन्द नज्म, आजाद नज़्म और...मुहर्री नज़्म आदि भागों में विभाजित कर सकते हैं। ग़ज़लकार को दो मिसरों (पंक्तियों) में ही ग़ज़ल लिखनी पड़ती है। इससे स्पष्ट होता है कि वह अपनी बात को दो मिसरों में ही पूर्ण करे जबकि नज़्म लिखनेवाले को यह आज़ादी होती है कि किसी विचार, एवं विषय को एक वाक्य में भी कह सकता है और एक पूरे पेज भी कह सकता है। ग़ज़ल गो फो दो मिसरों वाली गज़ल मे ऐसे ही शब्दों का प्रयोग करना होता है जो क्लासिकी गज़ल के लिए आवश्यक है। नज़्म निगार (नज़्म लिखनेवाला) को इन तमाम बातों और क्लासिकी परम्परा से कोई खास मतलब नहीं। वह अपनी बात को किसी भी ढंग से प्रस्तुत कर सकता है।

एक जमाना ऐसा भी आया जब उर्दू आलोचकों ने गज़ल में परम्परागत (घिसे-पिटे) विषय को बयान करने पर कटु आलोचना की। इसमें हाली पेश-पेश नज़र आते हैं। जब उन्होंने 1893 में 'मुकद्दमा शेर ओ शायरी' लिखी तो उन्होंने उर्दू शायरी, विशेषकर गज़ल गोई को इस अन्दाज़ में बयान किया -

गुनाह कारवाँ छूट जायेंगे सारे।
जहन्नम को भर देंगे शायर हमारे।।

इसके पश्चात प्रगतिशील गज़लें भी लिखी जाने लगीं।इस तरह उर्दू गज़ल कई मोड़ों से गुजरी। फिर भी इसकी बुलन्दी में इज़ाफा होता ही गया। इक्कीसवीं सदी तक आते-आते गज़ल ने अनेक महत्त्वपूर्ण गज़लकारों को जन्म दिया जिनमें मज़हर इमाम, शहरयार, बशार बदर, अमान अशरफ, अहमद फराज़, सिद्दीक मुजीबी और शहरेरसूल के नाम उल्लेखनीय हैं।

मज़हर इमाम (1928) ।आप उर्दू गज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इनकी गजलों का संग्रह 'बानकी कहकशाँ की' शीर्षक से सन 2000 में प्रकाशित हुआ है। जिससे इनके बुलन्द शौक़ और अन्दाज़ का पता

चलता है। उन्होंने सामाजिक आवश्यकताओं को मद्देनजर रखकर शायरी की है। इनका एक शेर इस प्रकार है -

यह हादसा अजब जिन्दगी में होना था,
मैं अजनबी की तरह खुद अपने घर में रहा।

उर्दू शायरी में फूल को बहुत महत्त्व दिया गया है। फूल सौन्दर्य का प्रतीक है। जिस प्रकार फूल खिलता है तो मुरझा भी जाता है उसी प्रकार यदि सौन्दर्य निखरता है तो एक दिन उस सौन्दर्य का वजूद ही नहीं रह पाता। कहने का मतलब है कि जब कोई वस्तु अस्तित्व में आती है तो वह समाप्त भी हो जाती है। इसको मजहर ने यूँ बयान किया है -

यूँ न मुरझा के मुझे खुद में भरोसा न रहे,
पिछले मौसम में तेरे साथ खिला हूँ मैं भी।

इन दोनों शेरों से स्पष्ट होता है कि 'मज़हर इमाम' ने गज़ल के बुनियादी मिजाज़ का लिहाज रखते हुए नई अनुभूति और नई लय से रिश्ता जोड़ा है। वह धीमे लय व लहज़े में अपनी बात कहते हैं। भाषा-सम्बन्धी तोड़फोड़ या टेढ़ी मेढ़ी बहरों (छन्दों) से इन्हें कोई खास दिलचस्पी नहीं है बल्कि सहज अन्दाज़ में अपनी बात पाठकों तक पहुँचाते हैं।

कुँअर इखलाफ मोहम्मद खान (शहरयार) (1934) ने ईस इक्कीसवीं सदी में अपनी अलग पहचान बनाई है। 2006 में इनका छठा शेरों का संग्रह 'शाम होने वाली है' के नाम से प्रकाशित हुआ जिसमें नज़्में भी शामिल हैं। शहरयार, गज़ल और नज़्म दोनों क्षेत्रों में विशेष लोकप्रिय रहे हैं। इनकी 'उड़ान' नामक नज़्म अत्यन्त चर्चित है। लोकप्रिय है। उन्होंने समाज में फैली हुई समस्याओं और मशीनी जिन्दगी पर अपने शेर कहें हैं। - एक शेर देखिए -

तन्हाई की यह कौन सी मन्जिल है रफीकों,
ताहद नज़र एक बियाबान सा क्यों है।
सभी को गम है समुन्दर के खुश्क होने का,
यह खेल खत्म हुआ किश्तियाँ डुबोने का।

आज के औद्योगिक समाज में इन्सान के अकेलेपन को जितना इसने महसूस किया है उतना शायद किसी और नये शायर ने महसूस किया है -

अजीब सानहा मुझ पर गुजर गया यारो,
मैं अपने साये से कल रात डर गया यारो,
वह कौन था, वह कहाँ का था, क्या हुआ था इसे,
सुना है आज कोई शख्स मर गया यारों,

जैसे शेर उनकी गज़लगोई का सबूत दे रहे हैं। शहरयार ने कुछ फिल्मों में भी गज़लें लिखी हैं लेकिन अब उर्दू साहित्यमें ही लिखते हैं।

अहमद फराज : (1930-2008) ने अपने सौवीं सदी की गज़ल में बेशकीमती इज़ाफा किया है। इनके एक दर्जन से अधिक गज़ल संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी शायरी पर फैज अहमद फैज़ का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। अहमद फराज़ ने अपनी गजलों में इश्क व मोहब्बत को बहुत ही खुबसूरती से चित्रित किया है। प्रस्तुत गज़लों में इश्क व मोहब्बत के सौन्दर्य को देखा जा सकता है -

1. इश्क आगाज़ में हल्की-सी खलिश रखता है,
बाद में सैकड़ों अज़ारे लग जाते हैं।

2. तुम तकल्लुफ को भी, इखलास समझते हो फराज़,
दोस्त होना नहीं, पर हाथ मिलानेवाला।

बशीर बदर : बशीर बदर उर्दू गज़ल के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। अब तक इनकी शायरी के पाँच संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनके नाम 'अकाई', 'आस', 'आसमान', 'इमेज' और 'आम' हैं। आप जनता के बीच बहुत ही लोकप्रिय हैं। उनके कुछ शेर इतने

चर्चित हैं कि आम जनता इनका खूब प्रयोग करती है। कुछ शेर इस प्रकार हैं -

1. पत्थर के जिगर वालों, गुम में वह रवानी है,
खुद राह बनाएगा, बहता हुआ पानी।।

2. आ जाए अपनी यादों के, हमारे साथ रहने दो,
न जाने किसी गली में, जिन्दगी की शाम हो जाए।

निदा फाजली की शायरी का सिलसिला अब भी जारी है। इनकी बूढ़ी आँखो में बच्चों की आँखों वाली मासूमियत आज भी बाकी है। पत्रिकाओं में, मुशायरों में, गज़लों एवं फिल्मी गानों के शौकीन नाज़रीन (पाठकों) सामईन (श्रोताओं) तक निदा फाजली ने अपनी ऐसी पहचान बनाई है जिसे कभी मिटाया नहीं जा सकेगा। इन एक शेर इस प्रकार है -

पहली सी वह जमीन, न वह आसमान है,
मेरे लिए उदास है सारा जहाँ क्या।

इस शेर में शायर को न तो अपने बड़े होने का गुरूर है, न बदगुमानी, लेकिन यह अहसास (अनुभव) जरूर है कि लोग इसके काम के सबब (कारण) इससे मोहब्बत करते हैं और इसी मोहब्बत के तहत जब वह नहीं होगा तो सारा जहाँ इसके लिए उदास हो जाएगा। आइए निदा फाजली की एक ऐसा शेर देखते हैं जिसमें इनके उद्दोजहद (संघर्ष) का पता चलता है।

शाइस्ता महफिलों की फिज़ाओं में जहर था,
जिन्दा बचे हैं, जहन की आवारगी से हम।

नौमान शौक : इनकी शायरी में जहाँ एक तरफ साफ सुथरी जबान है और लहजे की नरमी है, वहीं दूसरी तरफ इनके यहाँ एक गही गहरी सोच व फिकर भी है। वह अपनी बात प्रभावी ढंग से कहते है। वह अपने दुखदर्द और अपनी खुशी में किसी को शामिल नहीं करना चाहते हैं। प्रस्तुत शेरों में शायर ने गम के इज़हार में भी अपनी खुद्दारी को बरकरार रखा है और प्रेम का फलसफा भी बयान किया है।

"गम की इस दरजा फरादानी में,
चाँद उतरा है, खुले पानी में,
दुनिया से सुन रखा है, मगर तजुरबा
पहली नजर में इश्क हमें तो नहीं हुआ नहीं,
हर ख्वाहिश का नाम इश्क
हर नुमाइश का नाम हुस्न,
अहले हविस ने इन दोनों की,
मिट्टी खराब की,

इसके अतिरिक्त अमीन अशरफ का 'बहार ईजाद' , हताब हैदर नकवी का 'मावराए सखुन', 'शहाबउद्दीन का 'शहर मेरे ख्वाब का', रशिद अवर का 'शाम होते ही', इरफान सिद्दीकी का 'इश्कनामा', निदा फाजली का 'जिन्दगी की तड़प' और जाहिदा जैदी का 'शोले जाँ' आदि गजल संग्रह उल्लेखनीय हैं।

गज़ल के अलावा उर्दू शायरी का दूसरा महत्तवपूर्ण क्षेत्र नज़्म है। वैसे नज़्म का प्रारम्भ नजीर अकबराबादी से माना जाताहै, इसी के साथ दक्खिनी शायरों ने भी नजमिया शायरी की है जिनके एहमियत से हमें इन्कार नहीं करना चाहिए। इक्कीसवीं सदी तक आते-आते उर्दू नज़्म में काफी बदलाव आया। पहले 'पाबन्द नज़्मे' लिखी गई। जन इससे शायरों का दिल उचाट। मर हुआ। गया तो उन्होंने 'आजाद नज़्मे लिखनी शुरू की। इस सदी में आजाद नज़्मे ही अधिक लिखी जा रहीं हैं जिनमें मुनीसिबल रहमान, जुबेर रिजवी, मोहम्मद सईदी, सिलाहउद्दीन परवेज और शफीक फात्मा, आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

इनमें से कुछ शायर ऐसे हैं जिन्होंने नज़्मों के जरिए उर्दू शायरी में अपनी खास पहचान बनाई है - उनमें से कुछ शायरों की नज़्मों पर विचार किया

जाएगा -

मुनीसिबुल रहमान (1924) : इन्होंने गज़ल की अपेक्षा नज़्म को विशेष महत्व दिया है। 'हिज्र व फराक़ की नज़्में', 'लफ्ज मोहम' इनके नये संग्रह हैं जिनमें आजाद नज्म को देखकर, इनकी शायरी का अन्दाजा लगाया जा सकता है। इनकी सि दौर की नज़्मों में समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है। इनकी नज्मों में तन्हाई, अलहेदगी (अलगाव), बेगानगी (लापरवाही) और अकेलेपन का बखूबी चित्रण किया गया है। इनकी नज्म आईना इसी सदी में लिखी गई है। मखमूर सईदी (1934-2010), 'उम्र गुजशता सदी में प्रकाशित हुआ। इनको 2008 में फिराफ सम्मान' से नवाजा गया है। इन्होंने अपनी शायरी का पेशतर हिस्सा नज्मों के लिए वक्फ कर दिया सलाह उद्दीन पखेज (1934) : पखेज का शुमार भी नज्मनिगारी में खासतौर से किया जाता है। 'नज्में तहीरात' 'सभी रंग मे सावन' 'सरासर आदि इनके नज्मों के संग्रह हैं। सलाह उद्दीन साहब ने मज़ाहिया (हास्य) नज़्मों पर अच्छा खासा काम किया है। 'सरासर' इनकी एक लम्बी नज़्म है। इसके शीर्षक से ही यह पता चलता है कि यह वजूदी नज़्म है (अस्तिवादी नज़्म)।

जदीद (आधुनिक शायरों में 'इज़हार वारी' का नाम भी महत्वपूर्ण है। 'अल्लामा' अवध के श्रेष्ठ और लोकप्रिय शायर हैं। इनकी गजलों में मुख्य रूप से सामाजिक समस्याओं का ही चित्रण हुआ। इस दृष्टि से इनका नज़्म संग्रह 'सोच की आँच' महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त मुशायरों में जो शायर अपना कलाम पढ़ते हैं उनमें वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक समस्याओं को ही मुख्य विषय बनाते हैं।

इस तरह से इक्कीसवीं सदी की शायरी का जायज़ा लिया जाए तो पता चलता है कि इन दस सालों में उर्दू शायरी ने, उर्दू अदब (साहित्य) में अपनी एक खास पहचान बनाई है।

✦ ✦ ✦